150
वीं जयंती
डॉ. हरीसिंह गौर

ये है बुन्देलखण्ड

भाग-दो

संपादक
लक्ष्मी पाण्डेय

परामर्श
सुरेश आचार्य

अनुज्ञा

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन, फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक व प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित आलेख/आलेखों के सर्वाधिकार मूल रचनाकार/रचनाकारों के पास सुरक्षित हैं। पुस्तक में व्यक्त विचार पूर्णतया लेखक/लेखकों अथवा सम्पादक/सम्पादकों के हैं। यह जरूरी नहीं है कि प्रकाशक इन विचारों से पूर्ण या आंशिक रूप से सहमति रखे। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय दिल्ली ही मान्य होगा।

© डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय

प्रथम संस्करण : 2020

ISBN 978-93-89341-78-2

प्रकाशक

अनुज्ञा बुक्स

1/10206, लेन नं. 1E, वेस्ट गोरख पार्क, शाहदरा, दिल्ली-110 032

e-mail : anuugyabooks@gmail.com • salesanuugyabooks@gmail.com

फोन : 011-22825424, 09350809192

www : anuugyabooks.com

मूल्य : 900 रुपये

आवरण

असरार अहमद, सागर

मुद्रक

अर्पित प्रिंटोग्राफर्स, दिल्ली-32

YE HAI BUNDELKHAND (Part-II) *edited by* Dr. Laxmi Pandey

अनुक्रम

5	*डॉ. सुरेश आचार्य*	यह गौर बब्बा के प्रति श्रद्धांजलि है...
11	*लक्ष्मी पाण्डेय*	सम्पादकीय

'अ' – टीकमगढ़, छतरपुर, पन्ना, निवाड़ी

27	*डॉ. दुर्गेश दीक्षित*	छतरपुर जिले के साहित्यकार (इतिहास से अद्यतन)
45	*अभिनन्दन गोइल*	कलातीर्थ : खजुराहो
54	*सुधीर साहू*	ओरछा : बुन्देलखण्ड की विरासत
59	*लक्ष्मी पाण्डेय*	छतरपुर : विदेशी इतिहासकार की दृष्टि में
65	*नारायण दास सोनी*	ऐतिहासिक ओरछा राज्य से बना जिला टीकमगढ़
74	*डॉ. विजयलक्ष्मी राय*	ओरछा की रीतिकालीन विभूति : केशवदास
79	*डॉ. रेशमी पांडा मुखर्जी*	पातिव्रत धर्म का उत्कर्ष-राजनर्तकी राय प्रवीण
88	*मनीष वैद्य*	...कि हरदौल आते हैं
95	*जयहिन्द स्वतन्त्र*	ऐतिहासिक नगर : बल्देवगढ़
98	*पं. उमादेव उपाध्याय*	पन्ना के धार्मिक एवं पर्यटन स्थल
114	*जगदीश किंजल्क*	अनोखे थे पन्ना के राजा : अमान सिंह
123	*डॉ. सुरेश आचार्य*	छत्ता तोरे राज में धकधक धरती होय
135	*एस. एम. अली*	पन्ना में बुन्देले राजाओं की छतरियाँ
139	*प्रतीक द्विवेदी*	अजयगढ़

'ब' – बुन्देलखण्ड

145	*मायूस सागरी*	बुन्देलखण्ड-महिमा
148	*प्रो. सुधाकर पाण्डेय*	बुन्देलखण्ड की राजनीति एवं संस्कृति का इतिहास
165	*डॉ. रमेश चन्द्र खरे*	बुन्देलखण्ड की प्रेम कहानियाँ
171	*आनन्द प्रकाश त्रिपाठी*	बुन्देलखण्ड का आधुनिक सृजनात्मक गद्य लेखन
193	*रविन्द्र दूबे कक्का*	बुन्देलखण्ड का रंगमंच
212	*विनोद मिश्र सुरमणि*	बुन्देलखण्ड की लोक देवियाँ
218	*हरगोविन्द कुशवाहा*	परम्पराएँ, रीति-रिवाज एवं संस्कार

बुन्देलखण्ड का आधुनिक सृजनात्मक गद्य लेखन

आनन्द प्रकाश त्रिपाठी

हिन्दी के विराट् साहित्यिक परिदृश्य में बुन्देलखण्ड की साहित्यिक उपस्थिति कई शताब्दियों से महत्वपूर्ण और गौरवशाली रही है। हिन्दी साहित्येतिहास के आदिकाल से लेकर वर्तमान आधुनिककाल तक शताधिक साहित्यकारों ने अपनी साहित्य-सर्जना के द्वारा हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया और लेखन की नयी दिशाएँ भी तय कीं। आदिकाल के कवि जगनिक से लेकर भक्तिकाल के महाकवि तुलसीदास, हरिराम व्यास, अक्षर अनन्य, ईसुरी आदि तथा रीतिकाल के महाकवि केशवदास, पद्माकर, रसनिधि, महामति प्राणनाथ आदि कवियों का अविस्मरणीय योगदान रहा है। हिन्दी साहित्य के इतिहास में रीतिकाल के साहित्य का अधिकांश बुन्देलखण्ड में ही रचा गया। आधुनिक युग में आकर कविता ने लोकभाषाओं की डगर पर चलने से इन्कार किया, खासतौर पर गद्य लेखन का आधार खड़ी बोली हिन्दी बनी। कविता और गद्य में हिन्दी के रचनाकार अपना सर्वोत्तम देने के लिए प्रतिबद्ध थे। आजादी के संघर्षकाल में हिन्दी और बुन्देली में लिखने वाले कवियों ने गद्य-लेखन में भी अपनी रचनात्मक प्रतिभा को आजमाया और अनेक कालजयी रचनाओं की सर्जना की। बुन्देलखण्ड की धरती पर गद्य लेखन की नींव बुन्देली और हिन्दी दोनों ही भाषाओं में पड़ी। स्वाधीनता आन्दोलन के संघर्ष में हिन्दी की अहमियत को बुन्देलखण्ड के रचनाकारों ने बखूबी समझा और राष्ट्रीय भावना, सामाजिक-साँस्कृतिक जागरण से अनुप्रेरित होकर विपुल साहित्य-सृजन किया। सामाजिक-धार्मिक रूढ़ियों और जर्जर मान्यताओं, पारम्परिक सोच से हटकर रचनाकारों ने आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के प्रभाव में बदलते सामाजिक-राजनैतिक प्रभावों में समाज के यथार्थ को देखा और समझा। बुन्देलखण्ड के हिन्दी साहित्य के इतिहास में हिन्दी का पहला बिरवा किसने रोपा, कविता और गद्य की किस विधा में श्रीगणेश हुआ यह प्रश्न फिलहाल अनुत्तरित है।

यद्यपि बुन्देली, ब्रजमिश्रित हिन्दी गद्य की रचना राजाश्रय में रहने वाले

कवियों के पत्र-व्यवहार और काव्य में छिटपुट हमें दिखाई पड़ती है। डॉ. पुनीत बिसारिया अपने एक लेख– 'बुन्देलखण्ड का काव्येतर साहित्य' में दतिया नरेश पृथ्वीसिंह, 'रसनिधि' के आश्रित कवि अक्षर अनन्य (ओरछा) को बुन्देलखण्ड का प्रथम गद्य लेखक कहते हैं। उनके ग्रन्थ 'आसंका रामचंद्रिका' और 'आसंका गीता' में उपदेशपरक गद्य का नमूना भी बिसारिया जी ने दिया है। महाराज छत्रसाल और अमानसिंह हिन्दूपत से सम्बद्ध कवि रामकृष्ण चौबे, जिनके पिता कालिंजर दुर्ग के किलेदार थे, उन्होंने भी गद्यात्मक टीकाएँ लिखी हैं। 'ध्यान मंजरी' में गद्य को देखा जा सकता है। (मेरी झाँसी-सं. सुरेन्द्रनाथ दुबे आदि) किन्तु यह गद्य आधुनिक हिन्दी गद्य का उदाहरण नहीं है।

सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और साँस्कृतिक जीवन में बदलते मूल्यबोध, प्रतिरोध, आधुनिक जीवन दृष्टि, वैज्ञानिक सोच और जीवन जगत्, राष्ट्र की बहुआयामी चुनौतियों ने बुन्देलखण्ड के सृजनधर्मियों के लिए जो नयी जमीन तैयार की उस पर विविध विधाओं में महत्वपूर्ण साहित्य की रचना हुई। उपन्यास, कहानी, निबन्ध, नाटक, एकांकी आदि के साथ संस्मरण, व्यंग्य, आत्मकथा, जीवनी, यात्रावृत्त, रिपोर्ताज, बाल-साहित्य और आलोचना के क्षेत्र में हमारे बुन्देलखण्ड में जन्मे तथा रहने वाले सभी साहित्यकारों ने अपनी प्रतिभा का सर्वोत्तम योगदान किया। बुन्देलखण्ड अंचल ही नहीं, व्यापक भारतीय समाज का परिदृश्य, उसका संघर्ष, उसकी आस्था, विश्वास, चुनौतियाँ और जीवन-मूल्यों को बचाए रखने की ललक ने बुन्देलखण्ड के रचनाकारों की चेतना और वैचारिकता को प्रखर रूप में विकसित और समृद्ध किया। आलोचना एवं समीक्षा में लेखकों का योगदान कम महत्वपूर्ण नहीं है, किन्तु अपनी लेखकीय प्रतिबद्धता के दबाव में मैंने इस लेख में आलोचना का पक्ष छोड़ दिया और सिर्फ गद्य की रचनात्मक विधाओं में लिखने वाले लेखकों की उपलब्धियों को ही रेखांकित किया है। मुझे कोई भ्रम नहीं है कि इस आलेख में अनेक लेखकों के नाम सम्मिलित नहीं हुए हैं। इसका प्रमुख कारण यह कि मेरी उनके स्रोतों तक पहुँच नहीं बन पाई। वैसे भी इस आलेख में प्रमुख रचनाकारों पर विचार करना मेरी प्राथमिकता और लेख की शब्द सीमा है। लेखकों का साहित्यिक मूल्यांकन भी सम्भव नहीं हो पाया है। सिर्फ सामान्य परिचय ही दिया जा सका है। इसका दर्द मुझे है। भविष्य में कभी विस्तार से लिखना चाहूँगा। एक उल्लेखनीय बात यह है कि बुन्देलखण्ड के सभी जिलों के हिन्दी गद्य लेखकों के बारे में जानकारी समझ सीमा में उपलब्ध

कहानियों का सृजन भी किया। 'नीतिदर्पण' की भाषा टीका के लिए उन्हें स्मरण किया जाता है। 'बूढ़े का ब्याह' मीर की चर्चित कहानी है।

पं. कामताप्रसाद गुरु हिन्दी के लब्ध प्रतिष्ठित वैयाकरण तथा कवि एवं नाटककार हैं। आपका जन्म सागर में सन् 1875 में और निधन 15 नवम्बर, 1947 को हुआ। गुरु बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार थे। सत्य, प्रेम, पार्वती और यशोदा उपन्यास के अलावा पद्मपुष्पावली, सुदर्शन जैसे पौराणिक नाटकों की रचना की है। हिन्दुस्तानी शिष्टाचार महत्वपूर्ण कृति है।

प्रेम बिहारी 'अजमेरी' विलक्षण प्रतिभा के धनी प्रेम बिहारी 'अजमेरी' थे। वे ओरछा, टीकमगढ़ (म.प्र.) के राज्य कवि थे। अजमेरी जी का जन्म 24 नवम्बर, 1881 ई. चिरगाँव, झाँसी (उ.प्र.) में हुआ था। ब्रजभाषा, खड़ी बोली, बुन्देलखण्डी तथा डिंगल में श्रेष्ठ काव्य सृजन के अतिरिक्त आपने कथा-लेखन, उपन्यास, नाटक, अनुवाद, समालोचना में अपनी रचनात्मक प्रतिभा का परिचय दिया है। 'प्रेम पराग' महत्वपूर्ण कहानी-संग्रह है। 'गोकुलदास' राजस्थान की बहुचर्चित वीर गाथा पर आधारित कृति है। 'हेमला सत्ता' गद्यकाव्य कृति है। पंडित और फकीर, शाही कुँजड़ा, भदभद, भालूराम-घालूराम संवाद घटनात्मकता कथा-काव्य हैं। उन्होंने द्विजेन्द्र लाल राय द्वारा लिखित 'रुस्तम सोहराब' के फारसी कथानक पर आधारित नाटक का उर्दू रूपान्तरण किया। कथाकार अमृतलाल नागर का यह कथन महत्वपूर्ण है कि–'अजमेरी जी की सभी रचनाएँ विलक्षण और रोचक हैं। 'देहाती वेश्या और शहराती उस्ताद' में बहुत बारीकी का शब्द चित्रण हुआ है। 'बीबी की बदौलत', 'वरदान', 'विडम्बना' आदि कहानियाँ बड़ी मनोरंजक और शिक्षाप्रद हैं। अजमेरी ने 'मधुकरशाह', 'सुखानन्द-मनोरमा', 'श्रीपाल चरित्र', 'कबीरदास' और कुछ अन्य एकांकियों की रचना की है।' 'अछूतोद्धार', 'वीर बालक', 'रामचरित' नाटक लिखे। अजमेरी जी की कहानी कला की प्रशंसा में रायकृष्णदास ने कहा कि- 'कहानी कहने की कला अजमेरी जी के बाद फिर कहीं देखने को नहीं मिली।' निश्चय ही मुंशी अजमेरी बुन्देलखण्ड के गौरव पुरुष हैं। 26 मई, 1937 ई. को अजमेरी जी ने इस संसार से महाप्रयाण किया था।

नाथूराम प्रेमी का जन्म 26 नवम्बर, 1881 को देवरी, सागर (म.प्र.) में हुआ और मृत्यु 30 जनवरी, 1960 ई. में मुंबई में हुई। प्रेमी जी लेखक, प्रकाशक, कवि, कथाकार, भाषाविद्, सम्पादक, विद्वान-चिन्तक समाज-सुधारक के रूप में विख्यात हुए। उन्होंने दिगम्बर और श्वेताम्बर दोनों ही

"मुझे बुन्देलखण्ड से प्रीति और भक्ति है। मैं मर कर फिर वहीं जन्म लेना चाहता हूँ। वह पावन क्षेत्र है, वह वीर भूमि है, उसका इतिहास समुज्ज्वल है। अब मेरा और आपका सबका कर्तव्य है कि इस बुन्देलखण्ड के गौरव को जीवित रक्खें और ख्याति को बढ़ावें।"

—कृष्णबलदेव वर्मा
मधुकर 1941 से

978-93-89341-78-2
₹ 900.00

अनुज्ञा बुक्स
दिल्ली-110032